चतुर्थ अध्याय
'प्रिय शबनम' : कथोपकथन

विचारकों की दो धाराएँ चित्रित की है। शम्मूदा एक आदर्श पात्र है। मध्यवर्ग के निम्न पात्रों के अन्तर्गत लाजो, मूलचंद, मंगल के पिता आदि का चित्रण उसी परिवेश में किया है और बच्चन निम्न मध्यवर्ग का पात्र होते हुये भी मानवीयता का प्रतीक है। इस प्रकार लेखक देवेश ठाकुर 'प्रिय शबनम।' उपन्यास के चरित्रांकन में सफल हुये है।

३:५ निष्कर्ष --

'प्रिय शबनम।' उपन्यास ढाई पात्रों का है। मंगल और शबनम पूर्ण एक-एक पात्र और लाजो को आधा पात्र माना जा सकता है। लाजो न मुख्य पात्र है और न गौण पात्र। उपन्यास का नायक मंगल निम्नमध्यवर्ग का है। वह संवेदनशील, अत्यन्त कुशाग्र बुध्दिमत्ता होते हुये भी उसके मन में हीनता की भावना बसी है। प्रेमी के रूप में उसमें समर्पन भावना है। अपनी असहाय सहेली लाजो को आधार देने के लिए अपने जीवन में आनेवाली हरियाली (शबनम) ठुकराता है। माँ को सुखी देखने का उसका एक स्वप्न है। अपने पिताजी से वह तिरस्कृत रहा है फिर भी उनके बुढ़ापे में उन्हें आधारहीन नहीं छोडना चाहता। लाजो तथा उसकी माँ की जिम्मेदारी अपनेपर लेता है। वह पार्टी का प्रतिबध्द कार्यकर्ता होते हुये भी नीजि जीवन में भावनाओं में बहता हुआ मिलता है। अन्त में अपनी बेटी आस्था को लेकर नयी आस्था के साथ जिन्दगी जिना चाहता है।

उपन्यास के पुरूष पात्रों में मंगल के अलावा शम्मूदा, शबनम, और मंगल के पिता, लाजो का पति, मंगल का गाँव का बच्चन आदि है। शम्मूदा अपने नीजि जीवन को ठुकराकर समाज के लिए समर्पित होनेवाले सच्चे देशभक्त तथा क्रांतिकारी है। देश सेवा के लिए उन्होंने अपना पारिवारीक जीवन होम कर दिया है। पिछडे, सर्वहारा लोगों के लिए, उनकी समस्याओं के लिए शम्मूदा के छटपटाहट दिखाई देती है। शम्मूदा पूर्णत: समर्पित चरित्र है जिसकी समाज में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यकता है।

चतुर्थ अध्याय

' प्रिय शबनम ' कथोप कथन --

४:१ कथोपकथन का स्वरूप --

उपन्यास के पात्र जिस पारस्पारिक वार्तालाप द्वारा कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं, और अपने चरित्र को प्रकाशित करते हैं, उसे कथोपकथन कहते हैं। कथोपकथन नाटक के प्राण होते हैं किन्तु उपन्यास में भी इसका कम महत्व नहीं है। नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है, उपन्यासों में वह बहुत कुछ कथोपकथन द्वारा लायी जाती है। कथोपकथन द्वारा घटनाओं को गतिशीलता प्रदान की जाती है और बहुतसी नवीन घटनाओं का प्रादुर्भाव होता है। प्रभावशाली कथोपकथन ही उपन्यास को मनोरंजक, स्वाभाविक और सजीव बनाते हैं। कथोपकथन द्वारा लेखक कथावस्तु की अनेक ऐसी घटनाओं का भी उल्लेख कर सकता है, जिन्हें कि वह अपनी मूल कथा के प्रवाह में घटित होती हुई नही दिखा सकता। कथोप - कथन द्वारा ही पात्रों की आन्तरिक मनोवृत्तियों का प्रदर्शन होता है। नाटकीय तत्वों के समावेश के कारण कथानक वास्तविक हो जाता है, फलत: उसमें आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। सबसे सफल कथोपकथन वे माने जाते हैं जिनका रचनात्मक आधार मनोवैज्ञानिक होता है और नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

४:२ कथोपकथन के उद्देश्य --

कथोपकथन अथवा संवाद की योजना किसी औपन्यासिक कृति में कई उद्देश्यों से की जाती है। जिसमें प्रमुखत: निम्नलिखित उद्देश्य मिलते हैं ---

४:२:१ कथानक का विकास करना --

कथोपकथन के द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति में वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता लाता है और उनके संगठन से कथानक का विस्तार करता है। इसके माध्यम से उपन्यासकार बहुत संक्षेप में कथावस्तु का विस्तृत विवरण उपस्थित कर सकता है। इसके अतिरिक्त कथोपकथन का कार्य उपन्यास के कथानक में विविधता, रोचकता और स्वाभाविकता उत्पन्न करना भी है।

४:२:२ पात्रों की व्याख्या करना --

कथोपकथन के द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति के चरित्रों की व्याख्या करता है और उन्हें विकास की ओर अग्रसर करता है। पात्रों के वार्तालाप के माध्यम से उपन्यासकार ही अप्रत्यक्ष रूप से अपने जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण तथा उद्देश्य आदि का प्रतिपादन करता है। उपन्यासकार के द्वारा आयोजित औचित्यपूर्ण स्पष्ट, सजीव एवं सरस कथोपकथन पात्रों के चरित्र की विवृत्ति करने में अपेक्षाकृत अधिक सहायक होते हैं।

४:२:३ उद्देश्य को स्पष्ट करना --

उपन्यास की सृजन प्रक्रिया में समाहित सभी आवश्यक बातों का वर्णन करके उपन्यासकार अपनी रचना का भवन खड़ा करता है परन्तु अपने दृष्टिकोण, जीवन-विषयक मान्यताएँ, दार्शनिक विचार अथवा अभीष्ट उद्देश्य वर्णनात्मक सपाट बयानी ढंग से न कहकर पात्रों के माध्यम से उद्घाटित करना चाहता है। वहाँ पर कथोपकथन इस कार्य की पूर्ति में सहायक होते हैं।

४:२:४ वातावरण निर्मिति करना --

कथोपकथन की सहायता से उपन्यासकार अपने इच्छित वातावरण की सृष्टि कृति में कर सकता है जिसके लिए वह अन्य किसी माध्यम का आश्रय नहीं लेना चाहता।

४:३ कथोपकथन के गुण --

कथोपकथन की सफलता तभी सम्भव है जब वह कुछ आवश्यक गुणों से युक्त हो । उपयोगिता की दृष्टि से कथोपकथन में निम्नलिखित गुण होने चाहिए --

४:३:१ उपयुक्तता --

कथोपकथन का सर्वप्रथम गुण उसकी उपयुक्तता है । उपयुक्त कथोपकथन विशेष स्थलपर विशेष चमत्कार की सृष्टि कर सकते हैं । कथोपकथन का उपन्यास की घटना,अवसर तथा वातावरण के उपयुक्त होना आवश्यक है ।

४:३:२ स्वाभाविकता --

कथोपकथन का समावेश उपन्यास में स्वाभाविक रूप से और आवश्यकतानुसार होना चाहिए । ऐसा नहीं प्रतीत होना चाहिए कि कोई कथोपकथन अस्वाभाविक अथवा अनावश्यक रूप से उपन्यास में समाविष्ट किया गया है ।

४:३:३ संक्षिप्तता --

कथोपकथन का संक्षिप्त होना उसकी प्रभावात्मकता में वृध्दि करता है । लम्बे कथोपकथन अस्वाभाविक और ऊब पैदा करनेवाले होते हैं । इसीलिए कथोप - कथन में स्वाभाविकता के साथ ही संक्षिप्तता का होना भी बहुत आवश्यक है ।

४:३:४ उद्देश्यपूर्णता --

उपन्यास में प्रत्येक कथोपकथन सोद्देश्य होना चाहिए । उद्देश्य रहित कथोपकथन फीके और अनावश्यक प्रतीत होते हैं । कथोपकथन का उद्देश्य किसी विशेष स्थलपर किसी महत्त्वपूर्ण शुभ या अशुभ भावी घटना का पूर्व संकेत भी हो सकता है ।

४:३:५ सम्बध्दता --

सम्बध्दता के अनुसार कथोपकथन के माध्यम से उपन्यासकार जिस बात को कह रहा हो या कहना चाहता हो उसमें कथानक तथा पात्रों से किसी-न-किसी प्रकार का प्रत्यक्ष पारस्पारिक सम्बन्ध अवश्य होना चाहिए ।

४:३:६ अनुकूलता --

कथोपकथन की भाषा भी पात्रों के अनुकूल हो । एक ओर कथोपकथन का पात्रों के स्वभाव से वैषम्य नहीं होना चाहिए तो दूसरी ओर उसे पात्रों के सामाजिक,बौध्दिक और सांस्कृतिक स्वरूप के अनुकूल भी होना चाहिए ।

४:३:७ मनोवैज्ञानिकता --

कथोपकथन में कलात्मकता लाने के लिए सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि आवश्यक है । चरित्रांकन की सूक्ष्मता तथा मनोवैज्ञानिकता पर आजके उपन्यास में बल दिया जाने लगा है ।

४:३:८ भावात्मकता --

कथोपकथन में भावात्मकता का गुण भी कभी-कभी उपन्यास को प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है । प्रेम,सुख,दु:ख तथा गम्भीर और विपत्ति के अवसर भावात्मक चेष्टाएँ एवं आकुलता के चिन्ह ही हृदय की बात को कह देने में समर्थ होते हैं ।

४:४ ' प्रिय शबनम ! ' में कथोपकथन --

' प्रिय शबनम ! ' उपन्यास में देवेश जी ने उपन्यास के प्रमुख पुरूष पात्र मंगल के माध्यम से कथानक को प्रस्तुत किया है । जिसमें मंगल अपनी प्रेमिका शबनम को दस वर्ष बाद पत्र लिखता है । पत्र में वह विगत दस वर्ष का विस्तृत वृतान्त देता है । लेखक ने उपन्यास के सभी तत्वों को मद्देनजर रखकर पत्रशैली में उपन्यास का निर्माण किया है । इन्ही तत्वों में से कथोपकथन के छोटे बड़े संवादों के माध्यम से उपन्यास को विकास की ओर अग्रसर किया है । कथोपकथन भी सभी गुणों से

युक्त बन गये हैं ।

उपन्यास का कथावस्तु के विकास में कथोपकथन का महत्त्वपूर्ण स्थान है । उपन्यास के पात्रों के वार्तालाप द्वारा लेखक ने कथानक आगे बढ़ाया है । जैसे मंगल और उसकी माँ का संवाद, मंगल और शबनम की परिस्थिति निर्देश कर कथानक को आगे बढ़ाता है --

' तुम्हे शबनम कैसी लगी माँ ?'

वह अपनी मोटरगाडी में बैठकर आयी थी ।'

' हाँ माँ ।'

' तेरे पास दो पहियों की साइकिल ही है ? '

मैं चुप रहा था ।

' उसका बाप क्या करता है रे ? '

' वह बहुत बड़े एडवोकेट है ।'

'और जानता है तेरा बाप क्या है ? '

मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं था ।

' उसकी माँ भी बहुत पढ़ी-लिखी होगी ? '

' होगी ही माँ । लेकिन उन्हें मरे तो पंद्रह सोलह साल हो गये । तब शबनम छह साल की थी ।'

' उसके पिता ने दूसरी शादी नहीं की ?'

' नहीं,' मैं उत्साह में बोला था ।

' अपने बाप के चरित्तर तू जानता है ?'

' मेरे पास इसका भी कोई उत्तर नहीं था ।

' मंगल । उसके कपडे टाँगने के लिए तेरे घर में कोई काम की खूँटी भी है ?'[१]

मंगल की स्मृति में शम्मूदा के साथ हुयी बातचीत बड़ी मार्मिक बन पडी है ---

' जानता हूँ ' लेकिन तुमसे आत्मीयता अनुभव करता हूँ न इसीलिए - और आत्मीयता में भावना तो होती ही है । कहकर वे मुस्करा पडे । सहसा मेरे मुँह से निकल गया,' तो क्या आप भी भावना में विश्वास करते है ? ' मुझे यह लगता

था कि तुम मुझे गलत समझाते हो । भावना तो पत्थर में भी होती है । कोमलता और तरलता भी । पाषाणों के उदर में स्त्रोतस्विनी होती है । पत्थरों पर चित्रित मूर्तियाँ कितनी भाव-प्रवण होती है । कोणार्क का सूर्य मन्दिर देखा है ? अजन्ता - एलोरा की गुफाएँ `

' उन पाषाणों में तो मनुष्य ने अपनी भावना प्रवेश दी है ।

' लेकिन उन्होंने उसे आत्मसात तो किया है और बिना भावना के किसी के प्रवेश को ग्रहण किया जा सकता है क्या ?`

' आज आप बहुत भाव-प्रवण हो रहे हैं शम्पूदा । क्या बात है ?`

' तुम कल तक चले जाओगे । तुम्हारे खिलाफ कोई आरोप खड़ा नहीं हो सका है । इसलिए तुमसे बातें करने चला आया ।`

' क्या सिर्फ बात करने - कुछ कहने के लिए नहीं `

' अब तुम शार्प हो गये हो ।` वह हँसने लगे ।' [२]

लेखक ने कथानक के विकास के साथ-साथ पात्रों के चरित्र-चित्रण तथा पात्रों की अन्तर्मनोवृत्तियों को खोलने में भी कथोपकथन का यथासमय प्रयोग किया है । पात्रों के वार्तालाप द्वारा ही पात्र एक दूसरों की पहचान करा देते हैं । लेखक ने पात्रों के विकास में मंगल और शबनम के वार्तालाप तथा अन्य पात्रों के वार्तालाप के माध्यम से चरित्र विकास किया है । जैसे -- मंगल और शबनम का संवाद --

' तुम मुझे और मेरे परिवेश को कबतक सहती रहोगी....?`

' सहने का कोई प्रश्न ही नहीं है ... मैं तो तुम्हारे परिवेश ,तुम्हारे विचार, तुम्हारे आदर्शों को अपने जीवन में उतार लेना चाहती हूँ ।' [३]

दूसरा एक उदाहरण देखिए --

तुमने पूछा -' एक बात पूछूँ.... ?`

डैडी से कब मिलोगे ? `

' मेरे डैडी बहुत प्रोग्रेसिव हैं । तुम्हें कुछ भी शुरु नहीं करना होगा । वे खुद आगे होकर तुमसे बाते करेंगे ।'

' मैं बडी मुश्किल से कह पाया था,' अभी तो तुम्हारे लायक मेरे पास कुछ भी नहीं है शबनम । न घर,न सम्मान न.... '

तो क्या वाइस-चान्सलर बनना चाहोगे ? या जब तक कारमाइकल रोड में फ्लैट न ले लो, प्रतीक्षा करते रहोगे ... ?" [४]

लेखक ने उपन्यास का उद्देश्य तथा वातावरण निर्मिति के लिए कथोपकथन का यथासमय प्रयोग करके उपन्यास में सजीवता लाने में सफलता पाई है । वार्तालाप द्वारा लेखक ने उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट किया है । वार्तालाप द्वारा लेखक ने उपन्यास में वातावरण निर्मिति करके अपना उद्देश्य सफल किया है । जैसे शम्मूदा और मंगल के वार्तालाप में भावना या एक मोह का क्षण आदमी को कैसे नीचे गिरा देता है । संवाद है ---

मैंने पूछा था ' तब पुरूष की नैसर्गिक इच्छाओं का क्या होता है... । '

' उन्हें दबा देना होता है । ' उन्होंने तर्क देना चाहा था ।

' लेकिन इच्छाओं को दबाने से इच्छाएँ मर तो नहीं जाती ऐसे में विस्फोट का खतरा पैदा हो जाता है ।

' सो तो है ... ' शम्मूदा कुछ सोचने लगे थे,' विस्फोट होता है मंगल । बहुत बडा विस्फोट होता है । यही एक समस्या है,जिसका हल खोजना पडेगा । " [५]

संक्षिप्त कथोपकथन उपन्यास में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं । लेखक ने कथोपकथन में संक्षिप्तता को ध्यान में रखकर कथोपकथन में मौलिकता लायी है । उपन्यास के कथोपकथन में नाटक की तरह वार्तालाप प्रस्तुत कर लेखक ने उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट किया है । कहीं कहीं लेखक ने बडे कथोपकथन की निर्मिति को है मगर छोटे संवाद अनेक स्थानोंपर मिलते हैं । जैसे शबनम और मंगल का संवाद --

' लेकिन क्या सिर्फ उत्साह है,आपसी समझ नहीं है ? तुमने मुझे बीच में टोक दिया था ।

' है । '

' जो तुम मुझे बतला रहे हो,उसकी जानकारी मुझे नहीं है ? '

' है ।'

' मैंने उसको निभाया नहीं है ? '

' निभाया है ।'

' आगे के लिए मुझपर विश्वास नहीं है ? '

' है । '

' तो फिर....? '

' अपने पर विश्वास नहीं हो पा रहा,शबनम....।'[६]

लेखक देवेश ठाकुर जी ने ग्रार्हस्थिक वातावरण के कथोपकथनों में बहुत ही सजीवता लायी है, क्यों कि जब हम ऐसे वार्तालाप पढ़ने लगते हैं तो हमारे सामने ' सास-बहु के झगडे ' का चित्र खडा होता है। उपन्यास में लेखक ने मंगल की मॉ और लाजो के कथोपकथन में संघर्षमयता दिखाई है। संवादों द्वारा ईंट का जबाब पत्थर से दिया गया है। लेकिन लाजो और अम्मा के एक संवाद कम ही मिलते हैं। इन दोनों के संवाद लेखक ने मंगल के माध्यम से प्रस्तुत किये है। जैसे -- मंगल और लाजो ---

मैंने लाजो से पूछा -' यह सब क्या है ? '

तो लाजो ने आँखें तरेरकर कहा' मैंने तुमसे पहले ही कहा था। इस बुढिया से मेरी फजीहत कराने के लिए ही मुझे यहाँ डाल गये थे न ?'

' लेकिन हुआ क्या ? '

' अपनी अम्मा से क्यो नहीं पूछते ? डायन कहीं की ... ।'

' लाजो ।' मैंने डॉटने के स्वर में कहा ।

' मुझे मत डॉटो ... ।'[७]

दूसरा उदाहरण देखिए -- मंगल ,अम्मा के बीच का --

मैं अम्मा से बोला-' अम्मा अब यह सब नहीं चलेगा। लाजो मेरी घरवाली है। मेरे बच्चे की मॉ है। यह अब इसी घर में रहेगी ।'

अम्मा ने नली से छूटती हुई गोली की तेजी के साथ जवाब दिया ,' तेरे बच्चे की मॉ है,ठीक। लेकिन तेरी घरवाली नहीं। बिल्कुल नहीं ... मैं इस डायन को यहाँ नहीं रहने दूँगी ।'[८]

कथोपकथन उपन्यास के पात्रों के अनुकूल बन पडे हैं । जैसे बौध्दिक पात्रों के मुँह से बौध्दिक विचार,भाषा में शिष्टता आदि दिखाया गया है । अनपढ, गँवार पात्रों के मुँह से निम्न विचार तथा भाषा में गँवारपन दिखाया गया है । बौध्दिक पात्रों में मंगल ,शबनम,शम्मूदा,रॉबिन मुकर्जी आदि हैं । उनके वार्तालाप उनके चरित्र के अनुसार दिखाये गये हैं । जैसे -- रॉबिन मुकर्जी और शम्मूदा

' तुम उससे प्यार करते हो .... ।'

' यह अलग बात है । लेकिन उसने अब तक मुझे पाँच हजार से ज्यादा रूपये दिये हैं - चंदे के रूप में ।'

' जासूस बनने के लिए आदमी पाँच नहीं, पचास हजार भी खर्च कर सकता है ?'

' जी '

' हाँ '

' अभाव में पला हुआ आदमी ही अभावग्रस्त और शोषित की पीडा को समझ सकता है । फैशन के लिए सहानुभूति जतानेवालों से कोई काम नहीं होता है ।'[९]

अनपढ़ या गँवार पात्रों में लाजो, मूलचंद आदि दिखाये हैं उनकी भाषा, विचार उनके चरित्रानुसार मिलते हैं । जैसे मंगल और मूलचंद का वार्तालाप --

' और तुम्हें यह बात महसूस नहीं हुई कि तुम्हारी औरत इतने दिन मेरे साथ रही है ?'

' मूलचंद एक क्षण के लिए चुप हो गया । लेकिन फिर बोला --

' बात ऐसी है, साब । अगर घर में आपकी लड़ाई हो जाये तो आप खाना नहीं खायेंगे क्या ?

' घर से लडकर आदमी होटल में खाना खा लेता है ।'

' तो ? '

' तो क्या ? लाजो ने यही किया । फिर गलती उसी की नहीं,मेरी भी तो होगी ।'

' लेकिन उसकी एक बच्ची भी तो है ।'

' मूलचंद फिर मुसकराया ,' मास्साब,होटल में खाने का बिल भी तो तो चुकाना पडता है कि नहीं ।'[१०]

उपन्यास में कथोपकथन विशेष स्थानपर आने पर चमत्कार निर्मिति करते हैं। साथ में स्वाभाविक तथा उपयुक्त लगते हैं। पाठक ऐसे कथोपकथन की कल्पना भी नहीं करते। जैसे - मंगल और मूलचंद के संवाद से --

' लाजो तुम्हारे साथ कब से रहती है ? '

' पाँच साल से साब।' वह थोडा-सा सकुचा गया।

(जितनी सहजता से वह कह गया था, मुझे आश्चर्य हो रहा था)

' तुम जानते थे वह मेरे साथ रहती है, वह मेरी औरत है।'

वह थोडा सा मुसकराया -' साब,आपके साथ रहती जरूर थी लेकिन औरत आपकी नहीं थी। औरत तो मेरी थी। हम दोनों की शादी हुई थी और यह शादी टूटी नहीं थी।' [११]

कथोपकथन भावात्मकता के स्तर पर लेखक ने अनेक भावों को उत्पन्न किया है। जैसे प्रेम,उत्साह,पारिवारिक विषाद,आदि। जैसे मंगल और लाजो के कथोपकथन में मंगल का भयभीत होना।

' क्या हुआ ? मैंने अचकचाकर पूछा।

' यह गुड्डी की लाश है, मंगल।'

' क्या ?' मैं सिर से पैर तक पसीने से नहा गया।' [१२]

४:५ निष्कर्ष --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का कथानक उपन्यासकार देवेश ठाकुर ने प्रमुख पुरुष पात्र मंगल के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पत्रशैली में लिखा हुआ यह उपन्यास है। परन्तु लेखकने इसमें उपन्यास के सभी तत्वों की ओर ध्यान दिया है। कथोपकथन में लेखक ने पात्रों के संवाद कही छोटे तो कहीं बहुत ही लम्बे बनाये हैं। लम्बे कथोपकथन पाठक के मन में ऊब न निर्माण करके कथानक के अनुकूल कथानक विकास को महत्त्वपूर्ण सहयोग देते हैं। संक्षिप्त कथोपकथन उपन्यास में नाटकीयता निर्माण करते हैं। उपन्यास में कथोपकथन वातावरण निर्मिति करके वह सजीव और

स्वाभाविक लगते हैं । ग्रार्हस्थिक वातावरण के संवाद आँखों के सामने चित्र खड़ा करते हैं । असम्बध्द कथोपकथन का निर्माण लेखकने कही भी नहीं किया है । लेखकने उपन्यास के विकास में उध्देश्यपूर्णता की ओर ज्यादा ध्यान दिया है । पात्रों की मनोदशा,बोल-चाल,रहन-सहन,वैचारिकता के अनुसार मनोवैज्ञानिकता के स्तरपर कथोपकथन की निर्मिति की है । पात्रों के विकास में कथोपकथन का महत्त्वपूर्ण स्थान है । पात्रानुकूल भाषा के कथोपकथन सजीव लगते है और वे हमारे सामने नाटक की तरह दृश्य निर्माण करते हैं । इस प्रकार लेखक देवेश ठाकुर उपन्यास में सार्थक उपयुक्त कथोपकथन की निर्मिति करने में सफल हुये है ।

संदर्भ

१	देवेश ठाकुर	' प्रिय शबनम '	पृ.२८ ।
२	वही	वही	पृ.५० ।
३	वही	वही	पृ.३९ ।
४	वही	वही	पृ.२१ ।
५	वही	वही	पृ.३० ।
६	वही	वही	पृ.३९ ।
७	वही	वही	पृ.५१ ।
८	वही	वही	पृ.६१ ।
९	वही	वही	पृ.४५-४६ ।
१०	वही	वही	पृ.७७ ।
११	वही	वही	पृ.७७ ।
१२	वही	वही	पृ.३३ ।